Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु को मंदिर में पेश किया गया

लुका २: २२-३८

खोदाई: मंदिर समारोह से यीशु के माता-पिता के बारे में क्या पता चलता है? शिमोन की भविष्यवाणियों में वह यीशु की सेवकाई के बारे में क्या भविष्यवाणी कर रहा था? शिमोन की भविष्यवाणी की तलवार ने मरियम के मन की शांति को कैसे खतरे में डाला? अन्ना आपको किसकी याद दिलाते हैं? वह शिमोन की भविष्यवाणी को कैसे पूरा करती है? शिमोन और अन्ना की इन चौंकाने वाली भविष्यवाणियों का उन सभी पर क्या असर होगा जो उस दिन सुन रहे थे?

प्रतिबिंब: मसीह आपके जीवन में कैसे प्रकाश लाया है? कैसे वह अभी भी संसार भर में लोगों के गिरने और उठने का कारण है? क्या आपके माता-पिता ने आपको प्रभु को समर्पित किया था? ऐसा कैसे? यदि आप समर्पित नहीं थे, तो आप इसके बारे में कैसा महसूस करते हैं? परमेश्वर आपके जीवन में किसी बात की पुष्टि करने के लिए शिमोन या अन्ना को कब लाया है?

यीशु के जन्म के आठ दिन बाद, यूसुफ और मरियम ने अपने पुत्र को बेतलेहेम में खतने की वाचा के लिए प्रस्तुत किया, जिसने उसे यहोवा और अब्राहम के बीच की वाचा के एक वास्तविक पुत्र के रूप में पहचाना (उत्पत्ति १७:१-१४)। उस समय उन्होंने उसका नाम आधिकारिक किया: यीशु, या योह्वाव बचाता है। फिर, मूसा की व्यवस्था के अनुसार, वे यरूशलेम के मन्दिर तक पाँच मील की यात्रा करेंगे। वहाँ, मरियम बच्चे के जन्म के बाद अपने स्वयं के औपचारिक शुद्धिकरण के लिए एक बलिदान की पेशकश करेगी, फिर वह परमेश्वर के स्वामित्व की मान्यता में अपने पहलौठे को पर्मेस्स्वर के सामने पेश करेगी। इस साधारण समारोह में, सबसे पहले, बच्चे को एक पुजारी को प्रस्तुत करने की मान्यता में शामिल थी यहोवा का स्वामित्व।

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 2



तब मरियम को यहोवा की व्यवस्था के अनुसार
बलिदान चढ़ाना था। वह महिलाओं के दरबार के सुंदर द्वार से मंदिर में प्रवेश करती। अंत में कार्यवाहक याजकों में से एक निनिकोर के गेट पर मरियम के पास आएगा, और उसके हाथों से वह भेंट ले लें जो वह लाई थी। जबकि एक याजक ने उन कबूतरों का वध किया जो वह कांस्य वेदी पर चढ़ा रहा था (निर्गामम्म Fa मेरी टिप्पणी देखें – बबूल की लकड़ी की वेदी को कांस्य से मढ़ा हुआ), मरियम प्रतीक्षा कर रही थी, जबकि पवित्र स्थान के अंदर सुनहरी वेदी पर धूप जलाई जा रही थी (देखें निर्गामम्म Fp पर टिप्पणी – अभयारण्य में धूप की वेदी: मसीह, पिता के साथ हमारा वकील)। चूँकि मरियम कोई ऐसी भेंट पेश नहीं कर रही थी जिसके लिए उसे उस पर हाथ रखने की आवश्यकता थी, उसे कांसे की वेदी द्वारा वध पर हाथ रखने के लिए याजकों के दरबार में प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं थी. बड़े चौक में उसके पीछे उपासकों की भीड़ होगी। जब वह राजसी निनिकोर गेट पर पंद्रह अर्धवृत्ताकार सीढ़ियों के शीर्ष पर खड़ी थी, तो वह पवित्र स्थान में देख सकती थी।



महिलाओं का न्यायालय केवल महिलाओं तक ही
सीमित नहीं था। कोई भी यहूदी जो औपचारिक रूप से स्वच्छ था, इस क्षेत्र में जा सकता था – पुरुष, महिलाएं और बच्चे। वास्तव में, यह संभवतः पूजा के लिए सबसे आम स्थान था, यहूदी परंपरा के अनुसार, अदालत के तीन किनारों के साथ केवल एक उठी हुई गैलरी में महिलाएं रहती थीं। फिर भी केवल पुरुषों को राजसी निनिकोर गेट से जाने की अनुमति थी, जो महिलाओं के दरबार से इज़राइल के दरबार में जाता था। महिलाओं के न्यायालय ने ७०.८७ गुणा ७०,८७ मीटर, ५,०२३ वर्ग मीटर या १६,४७५ वर्ग फुट क्षेत्र

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 3

को कवर किया। पर्वों के अवसर पर वहाँ पूजा के महान कार्य होते थे। यह स्थान कुछ हद तक, खुले प्रांगण में मंदिर आराधनालय के रूप में कार्य करता था। इसलिए महिलाओं को मुफ्त पहुंच थी।

सबसे पहला व्रत था बच्चे के जन्म के बाद मां की शुद्धि। टोरा के अनुसार, एक माँ को एक लड़के को जन्म देने के चालीस दिन बाद और एक लड़की को जन्म देने के अस्सी दिन बाद एक शुद्धिकरण अनुष्ठान से गुजरना पड़ता था। जब मरियम ने एक लड़के को जन्म दिया, तो यह घटना उस समय घटी जब यीशु इकतालीस दिन का था। इस अनुष्ठान का उद्देश्य उसकी औपचारिक सफाई और शुद्धिकरण के लिए परमेश्वर के साथ संवाद बहाल करना था। जब लैव्यव्यवस्था के अनुसार उसके शुद्धिकरण का समय पूरा हो गया था (चालीस दिन), तो यूसुफ और मरियम ने यरूशलेम की यात्रा की (लूका २:२२अ)।

वह एक मेमना नहीं खरीद सकती थी, इसलिए उसने कबूतर के एक जोड़े की पेशकश की, एक को होमबलि के लिए (ब्याबस्ता बिबरन Ai – होमबलि पर टिप्पणी देखें) और दूसरे को शुद्धि भेंट के लिए (लूका २:२४)। इससे उनके बारे में दो महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। सबसे पहले, मैरी एक शुद्धिकरण भेंट लेकर आई (ब्याबस्ता बिबरन Al – शुद्धिकरण भेंट पर टिप्पणी देखें)। प्रायश्चित के उस अनुष्ठान का पालन केवल इसलिए किया गया था ताकि मैरी अनुष्ठानिक रूप से स्वच्छ हो जाए और उसे मंदिर और उसके बलिदानों तक पहुंच की अनुमति मिल जाए, लेकिन उसे माफ नहीं किया जाएगा। कोई क्षमा आवश्यक नहीं थी क्योंकि कोई पाप नहीं था।

दूसरा, यह भी स्पष्ट है कि जोसेफ और मरियम गरीबों में सबसे गरीब नहीं थे, लेकिन वे एक अमीर परिवार भी नहीं थे। लैव्यिकस में, हम सीखते हैं कि जो लोग बलि के रूप में बैल या मेमना नहीं ला सकते थे, वे कबूतरों का एक जोड़ा लाते थे। यदि वे और भी गरीब होते, तो वे तेल से अभिषिक्त मुट्ठी भर अनाज ला सकते थे। आज की रूढ़िवादी यहूदी महिलाएं बलिदान नहीं दे सकतीं, क्योंकि वहां कोई मंदिर नहीं है, लेकिन, वे शुद्धिकरण संस्कार के आंशिक पालन में खुद को मिकवे में विसर्जित कर देती हैं। मरियम पूजा करने के लिए मंदिर में नहीं गईं, बल्कि अनुष्ठान शुद्धिकरण से गुजरीं।

हालाँकि, रोमन कैथोलिक चर्च मरियम को पूजा की वस्तु के रूप में रखता है। उसे कहा जाता है: भगवान की माँ, प्रेरितों की रानी, और स्वर्ग की रानी (यिर्मयाह Cd पर मेरी टिप्पणी देखें – वे आटा गूंधते हैं और स्वर्ग की रानी के लिए केक बनाते हैं) एन्जिल्स की रानी, स्वर्ग का द्वार, स्वर्ग का द्वार, हमारा जीवन, अनुग्रह की माँ, दया की माँ, और कई अन्य जो उसकी अलौकिक शक्तियों का श्रेय देते हैं। जो सब झूठे हैं। औसत रोमन कैथोलिक इस विश्वास पर कार्य करता है कि मरियम के पास देवता की शक्तियाँ हैं।

“बेदाग गर्भाधान” का सिद्धांत सिखाता है कि मरियम स्वयं मूल पाप के बिना पैदा

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 4

हुई थी। पोप पायस IX ने ८ दिसंबर, १९५४ को इस सिद्धांत को बताते हुए मूल डिक्री जारी की। इस सिद्धांत के साथ-साथ कि मरियम पाप के बिना पैदा हुई थी, वहाँ सिद्धांत विकसित हुआ कि उसने अपने जीवन के दौरान किसी भी समय पाप नहीं किया। फिर, जैसे-जैसे एक कड़ी दूसरी कड़ी के लिए पहुँची, उन्होंने उसे त्रुटिहीनता का गुण दिया, जिसका अर्थ है कि वह पाप नहीं कर सकती थी, कि उसका स्वभाव ऐसा था कि उसके लिए पाप करना असंभव था! यह सब मरियम की उनकी पूजा का एक स्वाभाविक परिणाम था, जो उनके देवत्व में एक और कदम था। उनकी मारियोलेटरी ने इसकी मांग की! उन्होंने महसूस किया कि यदि वे उसे वह पूजा देंगे जो प्रभु के लिए उचित है, तो वह निष्पाप होगी। यह सिद्धांत १८५४ तक आधिकारिक नहीं हुआ था, तब से अठारह शताब्दियों के बाद जब ईसा मसीह कुंवारी मरियम से पैदा हुए थे, और इसलिए यह रोमन कैथोलिक चर्च के बाद के सिद्धांतों में से एक है।

यशायाह ने भविष्यवाणी की थी: यिशै के ठूंठ से एक कोंपल निकलेगी; उसकी जड़ से एक शाखा फल लाएगी (यशायाह ११:१)। इसका अर्थ यह था कि अंकुर, या मसीहा, केवल तभी प्रकट होगा जब दाऊद का घराना दाऊद के दिनों में नहीं, बल्कि उसके पिता यिशै के दिनों में घट गया होगा। इसलिए यशायाह दाऊद के बजाय यिशै का ज़िक्र करता है। वह डेविड के महान घर को एक शक्तिशाली पेड़ के रूप में चित्रित करता है जो एक मात्र ठूंठ बन कर रह गया था। लेकिन जबकि यह और कुछ नहीं बल्कि एक मरा हुआ ठूँठ प्रतीत हो रहा था, अचानक एक टहनी बढ़ने लगेगी और जीवन उत्पन्न करेगी। यशायाह के माध्यम से पवित्र आत्मा ने जो बिंदु बनाया वह यह था कि जब दाऊद का घर फिर से कंगाल हो गया था, जैसा कि यिशै के दिनों में था – तब मसीहा प्रकट होगा। यूसुफ और मरियम की आर्थिक स्थिति से यह स्पष्ट था कि यीशु तब आया जब दाऊद का घराना एक बार फिर से गरीबी में सिमट गया था।

मरियम के शुद्धिकरण के लिए दो भेंटें चढ़ाई गईं। एक चिरस्थायी अनुस्मारक के रूप में कि सारी मानवजाति पाप में जन्म लेती है, जैसा कि दाऊद ने स्वीकार किया (भजन संहिता ५१:५), एक माँ को बच्चे के जन्म से औपचारिक रूप से अशुद्ध माना जाता था, इसलिए पहले एक पापबलि चढ़ायी जाती थी। दूसरा, यहोवा के साथ एकता की बहाली के लिए एक होमबलि दी गई थी। महिला दरबार में तेरह तुरही के आकार के संग्रह बक्से में से तीसरे में दो कबूतरों के लिए भुगतान गिरा दिया गया था। महायाजक हन्ना के पुत्रों ने भुगतान किए जाने के बाद बलिदानों की आपूर्ति की। तब सदूकियों ने उन स्त्रियों को व्यवस्थित किया जो निनिकोर फाटक के पास नियत स्थान पर उपस्थित हुई थीं। वहाँ वे इस्राएल के दरबार के सबसे निकट होंगे ताकि जब पवित्र स्थान में सोने की वेदी पर धूप जलाया जाए तो वे उनकी प्रार्थनाओं के प्रतीक धुएँ के सफेद बादल को देख सकें। जैसे ही मरियम ने यरूशलेम के मन्दिर में आराधना की, उसका कृतज्ञ हृदय परमेश्वर की स्तुति से उमड़ पड़ा। वह विश्वास से परे धन्य थी। शुद्धिकरण समारोह पूरा होने के बाद और उस पर से सारे दाग हटा दिए गए थे, तब वह अपने बेटे को छुटकारे के लिए यहोवा के सामने पेश कर सकती थी।

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 5

दूसरा अनुष्ठान जिसे करने की आवश्यकता थी, वह यहोवा के लिए ज्येष्ठ पुत्र की प्रस्तुति और छुटकारे का था (मेरी निर्गाममम की टिप्पणी देखें Cd– पहले जन्म का सिद्धांत)। मरियम जब वहाँ खड़ी थी तब उसने प्रार्थना और धन्यवाद का मिश्रण किया। तब याजक उसके पास आता, और उस पर बलिदान का लोहू छिड़ककर उसे शुद्ध घोषित करता। तब उसका पहलौठा चाँदी के पाँच शेकेल देकर याजक के हाथ से छुड़ाया जाएगा (गिनती १८:१६)।

जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है, इस्राएलियों में सब के गर्भ में से पहिलौठा उसी का है (निर्गमन १३:२)। लेकिन अपने पहलौठे बेटे को यहोवा को देने के बाद, एक यहूदी परिवार उसे वापस पाने का एकमात्र तरीका छुटकारे के माध्यम से था (निर्गमन Bz – छुटकारे पर मेरी टिप्पणी देखें)। हर पहलौठे पुरुष को छुड़ाने की रस्म उन्हें मिस्र की गुलामी से उनके छुटकारे की याद दिलाती थी, प्रत्येक परिवार के दरवाजे की चौखट पर मेमने के खून से। इसलिए आज्ञाकारिता में, यूसुफ और मरियम नवजात यीशु को मंदिर में ले गए और उसकी औपचारिक प्रस्तुति के लिए एक पुजारी की तलाश में चले गए (लूका २:२२b)। इसके साथ दो छोटी प्रार्थनाएँ हुईं। पहला उस छुटकारे के लिए था जिसे परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता मोशे के द्वारा आज्ञा दी थी: तुझे हर एक के पहिलौठे पुरुष को यहोवा को सौंप देना है (निर्गमन १३:१२; लूका २:२३), और दूसरी प्रार्थना छुटकारे के भुगतान के लिए थी पाँच पवित्रस्थान-शेकेल की कीमत। उन दो प्रार्थनाओं के बाद, उनके बच्चे को उसके स्वामित्व की मान्यता में वास्तव में हाशेम को दे दिया गया था, और फिर से वापस खरीद लिया गया था।

परमेश्वर की इच्छाएँ नहीं बदली हैं (इब्रानियों १३:८)। इस्राएलियों के बीच हर गर्भ का पहिलौठा अभी भी यहोवा का है। यरूशलेम में कोई मंदिर नहीं है, और पाँच शेकेल का भुगतान नहीं किया जाता है, लेकिन सिद्धांत वही रहता है। आज, यहूदी अभी भी अपने पहलौठे पुरुषों को योहवः के लिए अलग करते हैं। पैसा अभी भी एक रपटनेवाली श्रेणी पर दिया जाता है। अमीर अधिक भुगतान करते हैं और गरीब वेतन कम। लेकिन वे अपने ज्येष्ठ पुत्रों को छुड़ाना जारी रखते हैं। विश्वासियों के रूप में, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सर्वशक्तिमान यहोवा ने हमें पाँच शेकेल से नहीं, बल्कि अपने पुत्र के बहुमूल्य लहू से खरीदा है।

जैसे ही मरियम निकानोर के फाटक से पन्द्रह अर्धवृत्ताकार सीढ़ियाँ उतरी, शिमोन के हृदय में आनन्द की अचानक स्वर्गीय ज्योति भर गई, एक धर्मी और भक्त व्यक्ति जो बूढ़ा हो गया था और इस्राएल को सांत्वना देने के लिए यहोवा की बाट जोह रहा था (लूका २:२५a)). वह उस समय विश्वास करने वाले शेष लोगों का सदस्य था। लूका ने जिस आराम की ओर इशारा किया है, वह यशायाह में अध्याय ४० से ६६ का मुख्य विषय है (यशायाह मेरी टिप्पणी देखें Hc– आराम, आराम मेरे लोग आपके भगवान कहते हैं)। वह सांत्वना केवल मसीहा के द्वारा ही मिल सकती थी।

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 6

शिमोन शास्त्रों का एक सावधान छात्र था और रूह कोडेश ने उसे बताया था कि वह तब तक नहीं मरेगा जब तक कि वह प्रभु के मसीहा को अपनी आँखों से नहीं देखेगा (लूका २:२५b -२६ सीजेबी)। उस दिन पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, वह मन्दिर के आँगन में गया। यहोवा ने शिमोन को देखने की आंखें दी, या एक दृष्टि से मसीहा को पहचानने की क्षमता दी। और जब माता-पिता बालक यीशु को उसके लिए वह करने के लिए लाए जो व्यवस्था की मांग थी (लूका २:२७), शिमोन , उस इकतालीस दिन के लड़के को इज़राइल के आराम के रूप में पहचाना। उसकी आँखों ने मसीहा को देखा था।

तुरंत, शिमोन ने बच्चे यीशु को अपनी गोद में लिया और
परमेश्वर की स्तुति की (लूका २:२८): उसके पहले जकर्याह और एलिजाबेथ की तरह, शिमोन आत्मा द्वारा घोषणा करने के लिए प्रेरित हुआ: अब, यहोवा, जैसा कि आपने यशायाह में वादा किया है, आप अब तेरे दास को शान्ति से विदा कर सकता है। क्योंकि मेरी आंखों ने तेरा किया हुआ उद्धार देखा है (लूका २:२३-३०; यशायाह ४०:५)। शिमोन अंग्रेजी नहीं बल्कि हिब्रू में बोल रहा था। उद्धार के लिए इब्रानी शब्द येशु है; जीसस के लिए इब्रानी शब्द लगभग एक ही है, येशुआ। दोनों एक ही इब्रानी मूल यशा से आए हैं, जिसका अर्थ है बचाना। अंतर केवल अंतिम अक्षर “h” का है जो मौन है। इसलिए, इब्रानी भाषा में शब्द उद्धार और यीशु शब्द एक ही लगते हैं। वास्तव में, उसने जो कहा वह यह था कि न केवल मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देखा है, परन्तु मेरी आंखों ने तेरे येशु को भी देखा है।

तब शिमोन ने दो समूहों के बारे में भविष्यवाणी की जो मसीहा के आने से लाभान्वित होंगे, जिसे उसने सभी राष्ट्रों की दृष्टि में तैयार किया था (लूका २:३१; यशायाह ५२:१०)। शिमोन ने वही दो दल देखे जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पिता जकर्याह ने देखे थे। पहला समूह अन्यजातियों का है, क्योंकि अभिषिक्त जन अन्यजातियों के लिए प्रकटीकरण के लिए प्रकाश होगा (यशायाह ४२:६, ४९:६ और ५१:४)। जकर्याह ने घोषणा की कि यह गोयीम थे जो अंधकार और मृत्यु की छाया में रह रहे थे। यशायाह ने पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि मसीहा अन्यजातियों के लिए एक प्रकाश होगा (यशायाहHp पर मेरी टिप्पणी देखें – यहाँ मेरा सेवक है, जिसे मैं समर्थन करता हूँ)। और उसके

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 7

आगमन से लाभान्वित होने वाला दूसरा समूह स्वयं यहूदी लोग होंगे, आपकी प्रजा इस्राएल की महिमा (लूका २:३२)। यह लूका में रिकॉर्ड किए गए चार गीतों में से चौथा है, पहला मरियम १:४६-६६, जकर्याह १:६८-७९, फिर स्वर्गदूतों का एक समूह २:१४, और अंत में यहाँ लूका २:२९-३२ में शिमोन द्वारा।

बच्चे के माता-पिता (यूसुफ और मरियम के यीशु के साथ संबंध का वर्णन करने का सबसे स्वाभाविक तरीका) उसके बारे में कही गई बातों पर अचंभित थे (लूका 2:33)। यह ऐसा था मानो उनके मूक विचार एक अनकहा प्रश्न था, जिसका शिमोन ने उत्तर दिया था। जैसा कि रहस्यवादी प्रतीत होता है, यूसुफ और मरियम दोनों जानते थे कि उसके शब्द भविष्यवाणी थे। शिमोन का गीत यशायाह ४२:६ और ४९:६ के लिए एक भ्रम था, जिसका अर्थ है कि पीड़ित दास अन्यजातियों के लिए रहस्योद्घाटन के लिए एक प्रकाश होगा। हालांकि, महान आयोग के अलावा, हम आम तौर पर सुसमाचारों में गोयीम के लिए एक मंत्रालय नहीं देखते हैं। यह भविष्यवाणी प्रेरितों के काम की पुस्तक में पूरी होगी (देखें प्रेरितों के काम १३:४७-४८, २६:२३)।

यह ऐसा था मानो शिमोन की आंखों के ठीक सामने पृथ्वी पर मसीहा का पूरा इतिहास तेजी से उत्तराधिकार में गुजर रहा था। यूसुफ और मरियम को आशीर्वाद देने के बाद, वह सीधे मरियम की ओर मुड़ा और उसने कुछ ऐसी भविष्यवाणी की जिसे वह शायद कई वर्षों बाद तक पूरी तरह से समझ नहीं पाई थी। उसने कहा, ध्यान से सुनो: यह बालक इस्राएल में बहुतों के उठने और गिरने का कारण है (लूका २:३४a)। वह भविष्यवाणी कितनी सही है कि सालों बाद पूरी होगी। यहोवा और उसकी सेवकाई मनुष्यों के लिये ठोकर का पत्थर, और ठोकर खाने की चट्टान बन जाती (यशायाह ८:१४b)। यीशु का पहला आगमन दुनिया के यहूदियों के बीच विभाजन का कारण बनेगा। ऐसे लोग होंगे जो उसके कारण उठेंगे, या जो विश्वास करेंगे, और जो अपने विश्वास की कमी के कारण गिरेंगे। शिमोन ने भविष्यद्वाणी की कि यीशु एक चिन्ह होगा जो कि इस्त्राएल की जाति के विरूद्ध और उसके विषय में कहा जाएगा, जो आज तक सत्य है (लूका २:३४b; यशायाह ८:१४)। एक बार फिर से, यह अवधारणा लूका में शुरू हुई और प्रेरितों के काम में पूरी हुई। इस्राएल में एक निरन्तर विभाजन है (प्रेरितों के काम १४:१-२; और २८:२३-२४)।

यीशु ने कभी भी अपनी माँ को विद्रोह, बुरे चुनाव, या परमेश्वर से दूर भागने के बारे में एक पल की भी चिंता नहीं होने दी। लेकिन इसने उसे चिंता करने या उसके बारे में नींद खोने से नहीं छोड़ा। मन्दिर में, जब वह केवल इकतालीस दिन का था, वृद्ध शिमोन बैठा था आने वाली बातों का एक अशुभ स्वर जब उसने मरियम से भविष्यवाणी की, “और तलवार से तेरा प्राण भी छिद जाएगा” (लूका २:३५b)। ये शब्द आम तौर पर यहूदी नेतृत्व द्वारा अपने बेटे की अस्वीकृति पर देखे गए दिल की धड़कन को ध्यान में लाते हैं। लेकिन वह समय होगा जब तलवार उसकी आत्मा में गहराई तक चुभेगी, जब उसने उसे क्रूस पर चढ़ा हुआ देखा होगा। लेकिन उनके शब्दों ने उस ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर भी कब्जा कर लिया जो अस्तबल से क्रॉस तक जाता था। येशुआ और उसकी माँ के बीच बातचीत के वे दुर्लभ वृत्तांत (शायद इसलिए कि मरियम ने अन्य सुसमाचार लेखकों

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 8

को अपनी कहानी सुनाई) प्यार से तौले जाते हैं, लेकिन दर्द से छलनी होते हैं। यीशु की टिप्पणी ने हमेशा उसकी माँ को चौकन्ना कर दिया और उसे उसके शब्दों पर विचार करने के लिए छोड़ दिया, यह पता लगाने की कोशिश की कि उसका क्या मतलब है, और निहितार्थों को सुलझाना है।

तब शमौन ने भी भविष्यवाणी की कि बहुतों के मन के विचार प्रगट होंगे (लूका २:३५a)। वास्तव में, बहुत से हृदयों के विचार नासरत के यीशु के व्यक्तित्व के माध्यम से प्रकट हुए थे और प्रकट होते हैं। जैसा कि उसने स्वयं कहा था: यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं। मैं मिलाप कराने नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं। क्योंकि मैं आया हूं कि ”मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग करूं – मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होंगे” (मत्ती १०:३४)। . वह आपको पक्ष चुनने देता है। आप उसके साथ धरने पर नहीं बैठ सकते। परिणामस्वरूप, इस प्रकार शिमोन ने कहा कि बहुत से हृदयों के विचार प्रकट होंगे।

उसी घड़ी आन्नाना म की एक भविष्यद्वक्तिन उनके पास
आई, जो यहोवा का वचन सुनाती यी। एक यहूदी महिला के लिए कोर्ट ऑफ वूमेन का दौरा एक हाईपॉइंट था। वह और आगे नहीं जा सकती थी, जब तक कि वह कोई ऐसी भेंट न चढ़ाए जिसके लिए उसे उस पर हाथ रखने और कांसे की वेदी पर वध करने के लिए जाने की आवश्यकता थी। हो सकता है कि उसने अन्य महिलाओं को तानाख सिखाया हो, या हो सकता है कि उसने मंदिर परिसर में पूजा करने के लिए आने वाली अन्य महिलाओं को हिब्रू शास्त्रों से प्रोत्साहन और निर्देश के शब्दों की पेशकश की हो। कुछ भी नहीं बताता है कि वह रहस्योद्घाटन का स्रोत थी, या कोई विशेष रहस्योद्घाटन कभी सीधे उसके पास आया था। यहां तक कि उसका यह अहसास कि यीशु ही मसीहा था, शिमोन को दिए गए रहस्योद्घाटन से आया था और बाद में उसके द्वारा सुना गया था। फिर भी उसे भविष्यवक्ता कहा जाता है क्योंकि दूसरों को परमेश्वर के वचन की सच्चाई की घोषणा करना उसकी आदत थी।

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 9

परमेश्वर के सत्य की घोषणा करने के उस उपहार ने अंततः सेवकाई में एक प्रमुख भूमिका निभाई जिसके लिए उसे आज भी याद किया जाता है।

केवल पांच महिलाओं को कभी नबी के रूप में संदर्भित किया गया था। सबसे पहले, मूसा की बहन मरियम थी (निर्गमन 15:20)। उसने फ़िरौन और उसकी सेना के डूबने के बारे में परमेश्वर की स्तुति के एक भजन में इस्राएल की महिलाओं का नेतृत्व किया (देखें मेरी निर्गमन Cl – मिरियम का गीत)। मिरयम गाया गया सरल एक-श्लोक का भजन उसकी एकमात्र दर्ज की गई भविष्यवाणी का सार था (निर्गमन १५:२१)।

तानाख में दूसरी नबिया लप्पीदोत की पत्नी दबोरा थी (न्यायियों ४:४)। इस्राएल के राजशाही की स्थापना से पहले यहूदी लोगों का नेतृत्व करने वाले सभी न्यायाधीशों में से वह अकेली महिला थीं। वास्तव में, वह पूरी बाइबल में एकमात्र महिला है जिसने कभी इस तरह का नेतृत्व किया और इसके लिए उसे आशीष मिली। ऐसा प्रतीत होता है कि यहोवा ने उसे अपनी पीढ़ी के उन पुरुषों के लिए फटकार के रूप में उठाया था जो भय से लकवाग्रस्त थे। उसने उनकी शक्ति का उपयोग नहीं किया, लेकिन मातृ भूमिका में शासन किया, जबकि बराक जैसे पुरुषों को नेतृत्व की उनकी उचित भूमिकाओं में कदम रखने के लिए उठाया जा रहा था। उसने यहोवा से निर्देश प्राप्त किए (न्यायियों ४:६), इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि उसने कम से कम एक बार परमेश्वर से प्रकटीकरण प्राप्त किया।

तीसरा, हुल्दा नाम की एक नबिया थी (दूसरा राजा २२:१४-२०)। उसने याजक हिल्किय्याह और अन्य लोगों के लिए यहोवा की ओर से एक वचन प्राप्त किया। उसके बारे में और कुछ नहीं पता है। उसका उल्लेख केवल न्यायाधीशों और दूसरे इतिहास ३४:२२-२८ में एक समानांतर मार्ग में किया गया है।

केवल दो अन्य महिलाओं को तनाख में नबिया कहा जाता है। नोआदीश (नहेमायाह ६:१४) नाम की एक झूठी भविष्यवक्ता, और यशायाह की पत्नी (यशायाह ८:३), जिसे केवल इसलिए भविष्यवक्ता कहा गया क्योंकि उसका पति एक भविष्यद्वक्ता था। इनमें से किसी भी महिला के पास एलिय्याह, यशायाह, या किसी अन्य भविष्यवक्ता की तरह चल रही भविष्यद्वाणी की सेवकाई नहीं थी। दूसरे शब्दों में, बाइबल में कहीं भी ऐसा कुछ भी नहीं है जो इंगित करता हो कि इनमें से किसी भी महिला ने कभी भविष्यवाणी का पद संभाला था।

अन्ना पेनुएल की बेटी थी, जिसके बारे में और कुछ नहीं पता है। और वह आशेर के गोत्र की थी। यह इज़राइल की तथाकथित “खोई हुई” जनजातियों में से एक है। लेकिन जाहिर है कि वह खोई नहीं थी, वह वहीं इज़राइल में थी। सच तो यह है कि वे कभी खोए नहीं थे। इसमें कोई संदेह नहीं है, उत्तरी दस गोत्रों का एक छोटा सा हिस्सा अज्ञात देशों में चला गया, लेकिन बाइबल विशाल बहुमत के बारे में बताती है, जो एक छानने की प्रक्रिया से गुज़रे जिससे विश्वासी वापस यहूदा में समाहित हो गए।

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 10

इस्राएल के उत्तरी राज्य के यहूदा के दक्षिणी राज्य से अलग होने के बाद, राजाओं और इतिहास की पुस्तकें बार-बार ७२२ ई.पू. में सामरिया पर अश्शूरियों के हमले से पहले उत्तरी दस गोत्रों में से बहुतों ने दक्षिण की ओर पलायन किया। कई लोग अभी भी जेरूसलम पर्वत पर स्थापित प्रतिद्वंद्वी मंदिर के बजाय पूजा और तीर्थयात्रा के केंद्र के रूप में यरूशलेम के प्रति वफादार थे। दूसरों का मानना था कि राजा दाऊद का सच्चा उत्तराधिकारी यहूदा में था, जबकि इस्राएल के राजा धर्मत्याग में गिर रहे थे। जब भी विभाजित राज्यों के बीच गृहयुद्ध छिड़ा तो ये दलबदल बढ़ गए। उदाहरण के लिए, दूसरा इतिहास १५:९ कहता है कि बड़ी संख्या में इस्राएल से [यहूदा के राजा आसा] उसके पास आए थे जब उन्होंने देखा कि यहोवा उसके साथ है (दूसरा इतिहास ११:१३-१७ और १९:४)। इसके अलावा, जब यहूदी बेबीलोन की बंधुआई से लौटे तो वे न केवल यहूदा और बिन्यामीन के दो गोत्रों से आए थे, वे सभी बारह गोत्रों से आए थे। माना जाता है कि आशेर उन दस “खोई हुई” जनजातियों में से एक था, और फिर भी अन्ना यरूशलेम में रहने वाला एक प्रतिनिधि था।

यीशु के जन्म के समय अन्ना बहुत बूढ़ी हो चुकी थी। ग्रीक पाठ उसकी सही उम्र के बारे में स्पष्ट नहीं है। इसका शाब्दिक अर्थ है: यह महिला लगभग चौरासी वर्ष की विधवा थी। इसका मतलब यह हो सकता है कि वह चौरासी साल से विधवा थी, लेकिन अधिक संभावना है कि बाइबल कह रही है कि वह चौरासी साल की विधवा थी। वह स्पष्ट रूप से अपने पति के साथ केवल सात वर्ष तक जीवित रही जब तक कि वह विधवा नहीं हो गई (लूका २:३६-३७a)। शिमोन की तरह, उसने भी मसीहा को पहचान लिया जब उसने मरियम के बच्चे को देखा। आम तौर पर, वह मंदिर के परिसर को कभी नहीं छोड़ती थी, लेकिन उपवास और प्रार्थना करते हुए रात-दिन आराधना करती रहती थी (लूका २:३७b)। वह किस लिए प्रार्थना कर रही होगी? निस्संदेह वही बात जिसके लिए शिमोन प्रार्थना कर रहा था, अर्थात् मसीहा के आने के द्वारा इस्राएल और यरूशलेम की मुक्ति। लेकिन उसी क्षण उनके पास आकर उसने महसूस किया कि जिस चीज के लिए वह प्रार्थना और उपवास कर रही थी, वह ठीक शिमोन की बाहों में लिपटी हुई उसके सामने थी।

उसने तुरन्त परमेश्वर को धन्यवाद दिया और उन सब से जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह रहे थे, बालक के विषय में बातें की (लूका २:३८ और यशायाह ५२:९)। अपूर्ण क्रिया काल निरंतर क्रिया का प्रतीक है। इसका शाब्दिक अर्थ है कि वह लगातार उसके बारे में सभी से बात करती थी। उसके पास खुशखबरी थी और वह इसे अपने तक ही नहीं रख सकती थी। यह उसके जीवन भर का एक संदेश बन गया। अंत में वह मंदिर परिसर छोड़ सकती थी। उसके बाद, वह बाहर गई और शेष विश्वासियों को, या उन लोगों को बताया जो इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे और उस पर विश्वास कर रहे थे, कि इस्राएल और यरूशलेम का आने वाला छुटकारा निकट था। मसीह का जन्म हो चुका था और उसने उसे देखा था।

इस्राएल में एकमात्र लोग जिन्होंने यीशु को उसके जन्म के समय पहचाना, वे विनम्र, सामान्य लोग थे। बिद्वान (देखें Av – बिद्वान का भेट), निश्चित रूप से विदेशी और गैर-यहूदी थे, और वे अपनी संस्कृति में समृद्ध, शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्ति

Au – यीशु को मंदिर में पेश किया गया लुका २:२२-३८ | 11

थे। लेकिन केवल इस्राएली जो यह समझते थे कि यीशु उनके जन्म के समय मसीहा थे, यूसुफ और मरियम, चरवाहे, शिमोन और अन्ना थे। दुनिया के लिए, वे सभी मूल रूप से कोई नहीं थे। हालाँकि, उन सभी ने उसे पहचान लिया, क्योंकि उन्हें बताया गया था कि वह कौन था, स्वर्गदूतों द्वारा, या किसी विशेष रहस्योद्घाटन द्वारा। पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, लूका एक के बाद एक उनके सभी विवरणों को दर्ज करता है, जैसे कि वह अपने मामले को साबित करने के लिए एक-एक करके कई गवाहों को बुला रहा हो।

इस फ़ाइल में हम जिन लोगों से मिलते हैं वे यहूदी विश्वासयोग्यता के आदर्श हैं। वे इस्राएल के बचे हुए विश्वासी थे जो अपने मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे। जकर्याह और इलीशिबा लेवी के गोत्र के थे, धर्मी और भक्त, उत्सुकता से इस्राएल के उद्धार की प्रतीक्षा कर रहे थे। शमौन ने ठाना कि जब तक वह यहोवा के मसीहा को अपनी आंखों से न देख ले तब तक वह न मरेगा। अन्ना यहूदी धर्मपरायणता का एक आदर्श था, एक विधवा जो खुद को पूरी तरह से पूजा, उपवास और प्रार्थना के लिए समर्पित करती थी। लूका का उद्देश्य परमेश्वर के बचे हुए विश्वासयोग्य लोगों से हमारा परिचय कराना है, जो यहोवा द्वारा उनसे की गई प्रतिज्ञाओं के पूरा होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।